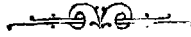


—: विषय-सूची :—



चौथा अध्याय [सर्वज्ञत्व-मीमांसा]

सम्यग्ज्ञान	१
सर्वज्ञता का मनोवैज्ञानिक इतिहास	४
अनन्त का प्रत्यक्ष असंभव	१६
सप्त-भंगी	२९
असत् का प्रत्यक्ष असंभव	४१
अनेक विशेष	५२
युक्त्याभासों की आलोचना	५३
पहला युक्त्याभास	५४
दूसरा युक्त्याभास	६२
तीसरा युक्त्याभास	७०
अन्य युक्त्याभास	७८
सर्वज्ञता और जैनशास्त्र	८१
उपयोग के विषय में मतभेद	८२
केवलज्ञानोपयोग का रूप	९१
केवली और मन	१०३
केवली के अल्पज्ञान	१२७
सर्वज्ञ शब्द के अर्थ	१४६
वास्तविक अर्थ का समर्थन	१५३
सर्वज्ञता की बाह्य परीक्षा	१७०

विविध केवली	१७०
संघ में केवली का स्थान	१७२
सर्वज्ञत्व की जाँच	१७५
महावीर और गोशाल	१७८
सर्वज्ञम्मन्य	१८४
सर्व विद्या-प्रभुत्व	१८५
सर्वज्ञ चर्चा का उपसंहार	१८५

पाँचवाँ अध्याय [ज्ञान के भेद]

प्रचलित मान्यताएँ	१८९
दिवाकरजी का मतभेद	१९२
अन्य मतभेद	१९७
श्रीधवल का मत	२०२
शंकाएँ	२१०
उपयोगों का वास्तविक स्वरूप	२१३
दर्शन के भेद	२२३
ज्ञान के भेद	२२६
मतिश्रुत का स्वरूप	२३७
मतभेद और आलोचना	२४९
श्रुतज्ञान के भेद	२५५
अंगप्रविष्ट	३१२
आचारांग	३१२
सूत्रकृतांग	३१२

स्थानांग	३१४
समवायांग	३१४
व्याख्याप्रज्ञप्ति	३१५
न्याय-धर्म-कथा	३१६
उपासकदशांग	३१९
अंतकृद्दशांग	३२४
अनुचरौपपातिक दशांग	३२६
प्रश्नव्याकरण	३२७
विपाकसूत्र	३३४
दृष्टि-वाद	३३४
अंग-बाह्य	३७७
श्रुत-रिमाण	३८०
अवधिज्ञान	३८८
मनःपर्ययज्ञान	४०४
केवलज्ञान	४१०
